समाजवादी चिंतक डॉ0 राम मनोहर लोहिया के विचारों में भारतीय समाज

डॉ0 वीरेन्द्र सिंह यादव,

एसोसिएट प्रोफेसर–हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषा विभाग,
डी0 एस0 एम0 राष्ट्रीय पुनर्वास विश्वविद्यालय,लखनऊ,उ.प्र.

डॉ0 लोहिया के जीवनीकार ओंकार शरद भी यह मानते हैं कि भारतीय राजनीति में डॉ0 राममनोहर लोहिया एकमात्र ऐसे चिंतक नेता हुए हैं, जिन्होंने अपने अनुयायियों को विचार और कर्म का एक खास ढंग सिखाया। मूल में जाकर सोचने का तरीका सिखाया। विचार के अनुसार आचार करने की शिक्षा दी। समाज के सबसे उपेक्षित और कमजोर इंसान को केन्द्र–बिन्दु बना कर करूणा और क्रोध के सहारे राजनीति चलाने का मार्ग बताया।

डा0 लोहिया ने सार्वजनिक जीवन से भ्रष्टाचार को हटाने या दूर करने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया। डा0 लोहिया स्थायी जांच आयोग द्वारा सार्वजनिक जीवन को भ्रष्टाचार मुक्त एवं निष्पक्ष बनाना चाहते थे। डा0 लोहिया ने व्यक्तियों को संघर्षशील एवं लड़ना सिखाया। वर्तमान समय में आवश्यकता इस बात की है कि पहले कुछ कारगर कदम उठाये जायें जिससे भ्रष्टाचार स्वयं कम हो जाये । जैसे न्यूनतम से अधिकतम के बीच सीमा निर्धारण करना, सिंचाई के लिए बिना शुल्क के पानी मुहैया कराना तथा सभी बच्चों के लिए एक ही तरह के प्राइमरी स्कूल का प्रबन्ध करना, दहेज प्रथा को समाप्त करना, रोजगार प्रदान करना आदि। तत्पश्चात एक स्थायी जांच आयोग का गठन किया जाये , इसके बाद यह देखा जाय कि यह आयोग अभियोग प्रमाणित करता है या नहीं ,यदि करता है तो उस पर उचित कार्यवाही होती है या नही, यदि होती है तो ठीक अन्यथा देश की स्थिति और खराब हो जायेगी।

वर्तमान की राजनैतिक उथल–पुथल में आज डॉ0 लोहिया जी की प्रासंगिकता सर्वाधिक है क्योंकि आपका स्वदेशी मन जिस कर्त्तव्य–बोध से बँधा था, उसमें सत्ता मोह की अपेक्षा जनशक्ति और जन की इच्छा–शक्ति को संगठित करने के प्रति विशेष इच्छा है। हमारे मौलिक अधिकारों की रक्षा के लिए राजनीति को केवल सत्ता की लालसा रहेगी तो नहीं संभव है। उसके लिए जन इच्छा तथा जन शक्ति पर आधारित सत्ता होनी चाहिए। डॉ0 लोहिया ने समाजवादी विचारधारा का केवल विश्लेषण ही नहीं किया, बल्कि उसका निदान भी बताया। अतः स्पष्ट है कि डॉ0 लोहिया के विचार ही देश और समाज में एकता ला सकते हैं, क्योंकि उनके विचारों में चिन्तन की गहराई के साथ कर्म की ऊर्जा पैदा करने की क्षमता है। समाज कैसे बदले, देश का आर्थिक ढाँचा कैसे सुधरे, निरन्तर बढ़ते हुए अन्यायों, अत्याचारों का प्रतिकार कैसे हो, विषमताएँ दूर करने के क्या–क्या उपाय हैं ? ये आज के ज्वलन्त प्रश्न हैं, जिसका उत्तर डॉ0 लोहिया के समाजवादी दर्शन में मिलता है।

डॉ0 लोहिया ने जब भारतीय समाज को देखा–परखा और पाया कि 'भारत का दिमाग बड़ा क्रूर हो गया है। जानवरों पर जैसी क्रूरता इस देश में होती है अन्य कहीं वैसी नहीं। मनुष्य एक दूसरे के प्रति क्रूर है। गाँव क्रूर है, महल्ला क्रूर है। लेकिन ऐसे कितने कुटुम्ब और लड़कियाँ हैं जो गाँव या महल्ले की क्रूरता से बच सकें। इसलिए उन्हें परम्परा और रस्सियों की बेड़ियों में जकड़ कर रखना पड़ता है। इसलिए भारत की क्रांति सोयी हुई है। अगर कहीं औरत चल

निकली समाज के असमान और जालिम ढाँचे को तोड़ने और फलस्वरूप शुचिता के सही अर्थ ढूँढ़ने तो देश के जीवन में शक्ति का प्रादुर्भाव होगा। आखिर गार्गी, मैत्रेयी इसी देश की अनोखी प्रतिभाएँ हैं।''[1] क्रांति की यह मशाल जलती रहे इसी कारण डॉ0 लोहिया ने नर–नारी की असमानता को दूर करने के लिए पाँच सूत्र दिये–योनि–शुचिता के नये आदर्शों की शिक्षा, सखा भाव से लेकर नर और नारी के आचार–विचार में स्वतंत्रता, अपने मन के अनुसार वर–वधू का चयन, स्वेच्छा और सदाचार का नया नैतिक बोध और दहेज प्रथा रूपी गन्दी चीज का उन्मूलन। डॉ0 लोहियों ने ये सूत्र दृढ़तापूर्वक सामाजिक परिवर्तन हेतु दिया था, जिसका पूर्ण परिपाक शेष है।

डा0 लोहिया के शब्दों में'' जिस तरह तवे के ऊपर रोटी उलटते–पुलटते सेंक लेते हैं ,उसी तरह से हिन्दुस्तान की सरकार को ईमानदार बनाकर छोडेंगें। यह भरोसा हिन्दुस्तान की जनता में यदि आ जाये तो फिर रंग आ जायेगा अपनी राजनीति में। डा0 लोहिया के इन विचारों का अध्ययन करते वक्त हमें यह आभास होता है कि न केवल ये सैद्धान्तिक बाते हैं,अपितु वे व्यवहारिक मालूम पड़ती हैं। हमें कुछ बदलने की ,त्यागने की इच्छा होनी चाहिए और कुछ को अपनाने की भावना। परिवर्तन इसी प्रक्रिया का नाम है। जिससे गन्दी,अव्यवहारिक चीजें छोड़ी जायें और सामयिक व्यक्तित्व के विकास में योग देने वाली चीजें हमारे जीवन में अपनायी जायें। डा0 लोहिया ने यह बतलाने का प्रयास किया कि कोई भी सिद्धान्त सर्वकालिक एवं सर्व–व्यवहारिक नहीं होता।

वर्तमान राजनेताओं के चाल, चरित्र और चेहरे के फर्क को देखकर आवश्यक हो जाता है कि हम डा0 लोहिया सरीखे नेताओं के विचारों का पुनर्पाठ करें क्योंकि आज शायद अपवाद स्वरूप ही कोई भी व्यक्ति राज्यसभा और लोकसभा में जनसेवा के लिए जाता हो ? हकीकत तो यह है कि अधिकतर लोग पद और पैसे के लिए ही जाना चाहते है। आज सदन में स्वस्थ्य बहस का अभाव दिखायी देता है? समय–समय पर हमारे नेताओं का छिछलापन भी दिखायी देता रहता है? ऐसे परिवेश में डा0 लोहिया याद आते हैं। ''लोकसभा में लोहिया जी की संसोपा के दर्जनभर सदस्य भी नहीं होते थे, लेकिन वहाँ बादशाहत संसोपा की ही चलती थी। जब लोहिया.. सदन में प्रवेश करते थे तो वह समां देखने लायक होता था। एक करंट–सा दौड़ जाता था। मंत्रिमंडल के सदस्य लगभग 'अटेशन' की मुद्रा में आ जाते थे और स्वयं प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी के चेहरे पर बेचैनी छा जाती थी। दर्शक दीर्घा में बैठे लोग कहते सुने जाते थे, वो लो, डॉक्टर साहब आ गए। डॉक्टर लोहिया ने अपनी उपस्थिति से लोकसभा को राष्ट्र का लोकमंच बना दिया। जिस दबे–पिसे इंसान की आवाज सुनने वाला कोई नहीं होता, उसकी आवाज को हजार गुना ताकतवर बनाकर सारे देश में गुंजाने का काम डॉ. लोहिया करते। कोई मामूली मजदूर हो, कोई सफाई कामगर हो, कोई भिखारी या भिखारिन हो, डॉ0 लोहिया उसे न्याय दिलाने के लिए अकेले ही संसद को हिला देते थे।''[2]

डा0 लोहिया कहते थे ,''जिस बात को ठीक समझो उस पर अड़ जाओ । सही बात के लिए समझौते मत करो''[3] इसलिए लोहियावादी न होते हुए भी आधुनिक काल के हिन्दी के प्रख्यात आलोचक डॉ0 नामवर सिंह भी डॉ0 राममनोहर लोहिया गाँधी के बाद पाखंडरहित दूसरे बड़े राजनेता मानते हुए यह कहने से नहीं चूके कि, ''मैं लोहियावादी नहीं हूँ लेकिन वह मुझे आकर्षित करते थे। मुझे कई बार लोहिया को सुनने का मौका मिला है। गाँधी के बाद लोहिया दूसरे बड़े राजनेता थे, जो पाखंडरहित थे। यहाँ तक कि नेहरू में भी पाखंड था।'' इसी क्रम में वह कहते हैं कि, ''राजनीति में व्यक्ति के कई चेहरे होते हैं।

और ऐसा लगता है कि वह मुखौटे लगाये हुए हैं, जबकि लोहिया पारदर्शी व्यक्तित्व के धनी थे।... वर्तमान समय में जब सभी विचारधाराएँ पिट चुकीं हैं, ऐसे में लोहिया जैसे इतिहास पुरूष सृजन की प्रेरणा दे सकते हैं।''[4]

डा0 लोहिया के कालजयी होने के कारण साफ हैं वह अपने लिए नहीं जिए, उनका समाजवाद कोरा समाजवाद नहीं था, वह आम आदमी के सच्चे हितैषी थे। वह चाहते तो कोई भी पद उन्हें सर्वसुलभ हो जाता लेकिन वह पद के लिए नहीं बल्कि पद्दलितों के लिए जीवन भर संघर्ष करते रहे। वे सादगी और सच्चाई की प्रतिमूर्ति थे। वे जिस भी विषय पर बोलते थे, उसमें मौलिकता और निर्भीकता होती थी। वे सीता–सावित्री पर बोले, शिव–पर्वती पर बोले, हिन्दू–मुसलमान या नर–नारी समता पर बोले, अंग्रेजी हटाओं या जात तोड़ो पर बोले–उनके तर्क प्राणलेवा होते थे। जो एक बार डॉ. लोहिया को सुन ले या उनको पढ़ ले, वह उनका मुरीद हो जाता था। डॉ0 लोहिया ने अपने भाषण और लेखन में जितने विविध विषयों पर बहस चलाई है, देश के किसी अन्य राजनेता ने नहीं चलाई।''[5]

इसे सुखद ही कहा जायेगा कि वर्तमान में गठित केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों के कार्यों–किसानों को आर्थिक सहायता उपलब्ध कराना, समाज में बढ़ती पूँजी असमानता को रोकना, मूलभूत उद्योगों की ओर पुनः वापसी, बैंकों के द्वार आम जनता को खोलने के लिए 'जन धन योजना' की शुरूआत एवं समाजवादी विचारों को जनता तक पहुँचाने के लिए 'समाजवादी पेन्शन एवं आवास योजना' आदि के द्वारा शासन तथा प्रशासन वास्तव में समाजवादी राज्य की परिकल्पना को जीवित तो कर ही रहा है बल्कि डॉ0 लोहिया के विचारों को और भी प्रासंगिक एवं कालजयी बना रहा है।

शांति दूत डा0 लोहिया के उपर्युक्त सभी विचार सम्यक दृष्टि और आशावाद से रंजित हैं। इस आशावाद से साक्षात्कार करने के लिए भय और आशंका से भरे आज के विश्व के समक्ष इतनी कठिनाईयाh हैं कि निराशावादी व्यक्ति इन विचारों को केवल कल्पना अथवा स्वप्न की संज्ञा देगा। किन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि यदि आशावादी मानवीय प्रयत्न इस ओर बढ़े तो वे संकुचित भावनाओं की दीवालें तोड़कर इस स्वर्णिम धरा पर उतार सकते हैं। ''इतिहास इस सत्य का साक्षी है कि अपनी अपूर्णताओं और भिन्नताओं के बावजूद मानव निरन्तर संगठन के उच्चतर स्तर पर चढ़ता गया है। यदि ऐसा न होता तो हम आखेट–युग और संयुक्त राष्ट्रसंगठन के युग में भारी अन्तर को किस प्रकार देख पाते ? जिस प्रकार आखेट युग अथवा नगर राज्यों के ग्रुग के लिए आज की दुनिया एक रहस्यमय कल्पना थी उसी प्रकार आज के व्यक्ति के लिए विश्व–सरकार एक सुन्दर स्वप्न हो सकता है। परन्तु डा0 लोहिया के बताये हुए मार्ग पर अनवरत रूप से चलकर हम उस सुन्दर स्वप्न तथा रहस्यमय कल्पना को इस धरती पर उतार कर सामंजस्यपूर्ण सुखद विश्व का निर्माण कर सकते हैं।''[6]

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. शरद ओंकार (संपादक)–समता और संपन्नता (डॉ0 राममनोहर लोहिया के अप्रकाशित लेख)–लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण :1996, पृष्ठ–207
2. वेदप्रताप वैदिक–यह लोहिया की सदी हो, दैनिक भास्कर–सतना (म.प्र.) संस्करण,मंगलवार, 23मार्च 2010
3. पाठक नरेन्द्र–कर्पूरी ठाकुर और समाजवाद–मेधा बुक्स – एक्स – 11 नवीन शाहदरा दिल्ली – 110032, प्र सं. 2008, पृ023

4. नई दिल्ली में लोहिया जन्मशती पर आयोजित त्रि–दिवसीय संगोष्ठी, मार्च 2010
5. वेदप्रताप वैदिक–यह लोहिया की सदी हो, दैनिक भास्कर–सतना (म.प्र.) संस्करण, मंगलवार, 23 मार्च 2010
6. दीक्षित ताराचन्द – डा0 राममनोहर लोहिया का समाजवादी दर्शन – लोकभारती प्रकाशन महात्मा गाhधी मार्ग, इलाहाबाद – 211001, पहला पेपरबैक्स संस्करण –2013, पृ0 203 – 204

Copyright © 2015, Dr. Virendra Singh Yadav. This is an open access refereed article distributed under the creative common attribution license which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.